पत्रकार बन खुद व दूसरों की जिंदगी संवारने में जुटीं दीदियां

कल तक अपनी पहचान के लिए मोहताज रहनेवाली आजीविका सखी मंडल की दीदियां आज अन्य ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत बन गयी हैं. घर की दहलीज पार कर पहले समूह से जुड़ीं. अपनी आर्थिक स्थिति में कुछ हद तक सुधार किया. अब पत्रकार बन खुद की बातें और अपने आसपास की घटनाओं से अन्य ग्रामीण महिलाओं को रूबरू कराते हुए उन्हें प्रोत्साहित करने में जुटी हैं. सखी मंडल की इन दीदियों की हौसला अफजाई में जहां झारखंड स्टेट लावलीहुड प्रमोशन सोसाइटी की अहम भूमिका रही है. वहीं, इन दीदियों को पत्रकार बनाने में पंचायतनामा ने भी भरपूर सहयोग किया है. बकायदा प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर इन दीदियों ने पत्रकार बनने के बारीकियों को सीखा. इसी का परिणाम है कि अब दीदियां बेधड़क अपने आसपास की घटित घटनाओं से सभी को रूबरू कराती हैं. पिछले अंक में इन दीदियों की भेजी गयी खबरें प्रकाशित हुईं और इस अंक में इन दीदियों के सफरनामा और खबरों को उन्हीं की जुबानी बताया जा रहा है.

कम्युनिटी रिपोर्टर

अब महाजन के आगे नहीं फैलाते हाथ : रूजलिना

रूजलिना खातून

जिला : पाकुड़

झारखंड एक आदिवासी बहुल राज्य है, जहां आज भी सुदूर गांवों में लोग गरीबी से जूझ रहे हैं. ऐसे में दीनदयाल अंत्योदय राष्ट्रीय आजीविका मिशन के तहत राज्य के गांवों में आजीविका सखी मंडल बनाये गये हैं. इन सखी मंडल के सदस्य समूह से ऋण लेकर अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने में सक्षम हो रही हैं. पहले जहां गरीब महिलाओं को पैसों की जरूरत पड़ती थी, तो उन्हें महाजन से उधार मांगना पड़ता था, जिसके लिए काफी ब्याज भी चुकाने पड़ते थे. लेकिन, अब यह स्थिति कमोबेस बदलती नजर आ रही है. जब से राज्य के सुदूर गांवों तक आजीविका सखी मंडल का आगमन हुआ, वहां की गरीब महिलाएं अब किसी महाजन के आगे हाथ नहीं फैलातीं. अब सखी मंडल से आसानी से ऋण लेकर व्यवसाय शुरू कर रही हैं और आत्मनिर्भर बन रही हैं. गांव-समाज में महिलाओं को अब सम्मान मिलने लगा है. व्यवसाय से जुड़ीं महिलाओं को जीएसएलपीएस की ओर से सर्टिफिकेशन इन रूरल इंटरप्राइज एडमिनिस्ट्रेशन एंड मैनेजमेंट का लघु कोर्स कराया गया. इस प्रशिक्षण में शामिल सखी मंडल की सदस्यों को कई जिम्मेवारी भी मिली. प्रशिक्षण लेने के उपरांत अपने जोन के सभी आजीविका सखी मंडल या ग्राम संगठन में जा कर व्यवसाय से जुड़ने को इच्छुक महिलाओं का बिजनेस प्लान बनाने एवं उन्हें आगे बढ़ाने में सलाह और सहयोग प्रदान करने की जिम्मेवारी दी गयी है. इस संबंध में चाईबासा की व्यापार साथी जहानारा बानरा कहती हैं कि पहले महिलाएं अपने पैसों को कहीं निवेश करने में डरी और सहमी रहती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं हो रहा है. अब महिलाओं को उनके पैसे निवेश करने में व्यापार साथी काफी सहयोग करती हैं. इसी का परिणाम है कि वर्तमान में काफी संख्या में गरीब महिलाएं अब लघु उद्यमियों के रूप में सामने आ रही है.

समूह ने बदली हर्षिता डुंगडुंग की जिंदगी

गांव : गड़गड़बहार
जिला : सिमडेगा

अलबेला आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं हर्षिता डुंगडुग कहती हैं कि समूह से जुड़ने से पहले उसकी भी जिंदगी अन्य महिलाओं की तरह ही थी. खुद की पहचान भी नहीं थी. अपनी जरूरतों के लिए पति पर ही पूरी तरह से निर्भर थी. घर से बाहर निकलने में भी पाबंदी थी. इसी बीच समूह की एक दीदी से मुलाकात हुई. बात-बात में ही दीदी ने मेरी पूरी कहानी सुनी और सहयोग का आश्वासन दिया. कुछ दिन बाद ही इस दीदी ने मुझसे आधार कार्ड और एक फोटो की मांग की. पूछने पर दीदी ने समूह बनाने की बात कही. सुन कर काफी अचरज हुआ कि कभी घर से बाहर कदम नहीं रखे हैं और ऐसे में समूह में मेरी क्या भूमिका होगी. लेकिन, दीदी ने हरसंभव सहयोग का भरोसा दिया. समूह बना और सप्ताह में एक दिन करीब 14 दीदियों की बैठक होने लगी. समूह में बचत करने संबंधी चर्चा होने लगी. करीब दो महीने बैठक करने के बाद टीसीसी हेमंत सर आये और आजीविका महिला मंडल से जुड़ कर समूह से फायदे, बचत करने के तरीके, लेन-देन के तरीके के बारे में विस्तार से बताया. 19-09-2014 को अलबेला आजीविका स्वयं सहायता समूह का गठन हुआ. धीरे-धीरे समूह से पूरी तरह से जुड़ते हुए गांव की कई अन्य महिलाओं को समूह से जोड़ा, ताकि उनकी भी स्थिति में सुधार हो सके. समूह में बेहतर कार्य के कारण ही मुख्यमंत्री रघुवर दास से उत्कृष्ट समूह के लिए सम्मानित हो चुकी हैं. हर्षिता कहती हैं कि अब इस समूह की अन्य दीदियां कैटरिंग का भी काम बखूबी कर रही हैं. समूह के कारण ही अब गांव-समाज में एक सम्मान मिल रहा है. कम्युनिटी रिपोर्टर बनने के लिए राजधानी रांची में पत्रकारिता का प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने का भी मौका मिला, जो हम जैसे दीदियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा.

भूत गांव में मंडा मेला का आयोजन

अमिता देवी

पंचायत : मरंगहादा
प्रखंड : रनिया
जिला : खूंटी

हर साल की भांति इस साल भी खूंटी जिले की मरंगहादा पंचायत अंतर्गत भूत गांव में मंडा पर्व का आयोजन हुआ. यह आयोजन प्राचीन शिव मंदिर के समीप आयोजित हुआ. इस बार मंडा पर्व में आजीविका सखी मंडल की दीदियों का अहम योगदान रहा. इन दीदियों ने समारोह स्थल को साफ-सफाई रखने में अहम भूमिका निभायी. मंडा पर्व के दौरान पश्चिम बंगाल के छऊ नृत्य के कलाकारों ने उपस्थित ग्रामीणों का मन-मोह लिया, वहीं लापुंग से आये कलाकारों ने आदिवासी नृत्य प्रस्तुत कर सभी का भरपूर मनोरंजन किया. इस दौरान पांच दिनों तक भगवान शिव की उपासना में शिवभक्त लीन रहते हैं. भोक्ता द्वारा झूलन कर गांव-समाज व लोगों में सुख-समृद्धि की कामना करते हैं.

आजीविका से जुड़ने के बाद ही जिंदगी में आया बदलाव : ललिता

ललिता बारला

जिला : खूंटी

गरीब परिवार में जन्मी ललिता बारला की स्थिति में भी आजीविका से जुड़ने के बाद बदलाव आया है. गरीबी के कारण ही ललिता किसी तरह से मैट्रिक तक की ही पढ़ाई कर पायी. इसी बीच परिजनों ने शादी भी करा दी. शादी होने के कुछ दिन बाद ही ससुराल से पति सहित उन्हें बाहर कर दिया गया. पति भी अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे. इस कारण मजदूरी कर किसी तरह से गुजर-बसर हो रहा था. कभी-कभी तो खाने तक के लाले पड़ जाते थे. इसी बीच आइसीआरपी की दीदियों का गांव में आगमन हुआ. इन दीदियों ने गांव की गरीब महिलाओं को अपने साथ जोड़ा. हमारी भी स्थिति अच्छी नहीं थी, इस कारण सोचा कि शायद इन दीदियों से जुड़ कर कुछ गरीबी कम हो सकती है. इन दीदियों ने पहले समूह बनाया और हमें भी जोड़ा. समूह से जुड़ते ही सक्रिय महिला का पद मिला और समूह की अन्य गतिविधियों में शामिल होने लगे. इस दौरान बचत करने समेत अन्य जानकारियां भी दी गयीं, जो मेरे लिए रामबाण साबित हुई. पति के पास हुनर था, लेकिन पैसे नहीं होने के कारण वो अपना हुनर नहीं दिखा पाते थे. इसी बीच पति से सलाह लेकर समूह से ऋण लिया और एक साइकिल मरम्मत की दुकान खोल ली. साइकिल की दुकान में पति की मेहनत और समूह में मेरी सक्रियता रंग लायी और धीरे-धीरे आमदनी बढ़ने लगी. सबसे पहले समूह से लिये गये ऋण को चुकाया. फिर कुछ समय बाद खेत लिया और अब खेती भी बखूबी करने लगे हैं. समूह के माध्यम से सिलाई और राजधानी रांची में कम्युनिटी रिपोर्टर के लिए पत्रकारिता का प्रशिक्षण भी लिया. इस तरह अब गरीबी से निकल कर गांव की अन्य दीदियों को गरीबी से निकालने में पूरी तरह से जुड़ गयी हूं. अपने इस सफर को बेहतर बनाने में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी यानी जेएसएलपीएस का अहम योगदान है.